



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गृहविज्ञान शिक्षा के प्रावधानों का नीतिगत एवं समीक्षात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE



Authors

रितु श्रीवास्तव

शोध छात्रा

डॉ. निशा मिश्रा

सहायक आचार्य

गृहविज्ञान विभाग

मेजर एस. डी. सिंह विश्वविद्यालय

फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गृहविज्ञान शिक्षा से जुड़े प्रावधानों का नीतिगत एवं समीक्षात्मक विश्लेषण करता है। नीति बहुविषयकता, कौशल-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, समुदाय-केंद्रित शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देती है, जो गृहविज्ञान की व्यावहारिक प्रकृति से मेल खाती है। अध्ययन गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, शिक्षक प्रशिक्षण और रोजगार संभावनाओं पर नीति के प्रभावों की पहचान करता है। अवसरों के साथ चुनौतियाँ-लैंगिक पूर्वाग्रह, वैकल्पिक विषय की मानसिकता, संसाधनों की कमी-भी रेखांकित हैं। निष्कर्षतः प्रभावी क्रियान्वयन, पाठ्यक्रम पुनर्गठन, समुदाय साझेदारी और समावेशी दृष्टि से गृहविज्ञान को मुख्यधारा में स्थापित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, गृहविज्ञान शिक्षा, कौशल-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, व्यावसायिक शिक्षा, समुदाय-केंद्रित शिक्षा।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव का दस्तावेज है। यह नीति 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बाद सबसे व्यापक और दूरगामी शैक्षणिक सुधारों का प्रस्ताव प्रस्तुत करती है। स्वतंत्रता के बाद यह पहला अवसर है जब शिक्षा नीति ने केवल संरचनात्मक सुधारों तक सीमित न रहकर शिक्षा के दर्शन, उद्देश्य, पद्धति और मूल्यांकन के सभी आयामों को एक साथ पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया है। इस नीति ने न केवल शिक्षा के स्वरूप, पद्धति और मूल्यांकन प्रणाली को पुनर्परिभाषित किया है, बल्कि उन विषयों को भी केंद्रीयता प्रदान की है जो पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में हाशिये पर रहे हैं। गृहविज्ञान ऐसा ही एक विषय है जिसकी प्रकृति बहुविषयक, व्यावहारिक और जीवनोपयोगी है। नीति में कौशल-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक दृष्टिकोण और समुदाय-केंद्रित शिक्षा पर जो बल दिया गया है, वह गृहविज्ञान की मूल अवधारणाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन प्रावधानों की पहचान करना है जो गृहविज्ञान शिक्षा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं साथ ही, यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि यह नीति गृहविज्ञान के शैक्षणिक पुनर्गठन, पाठ्यचर्या निर्माण, मूल्यांकन पद्धति और व्यावसायिक संभावनाओं को किस प्रकार प्रभावित करती है। अध्ययन गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें नीति दस्तावेजों, पाठ्यचर्या रूपरेखाओं और शैक्षणिक शोध साहित्य का समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध की कार्यप्रणाली में तीन चरण शामिल हैं: पहला, नीति दस्तावेज का विषय-वार

विश्लेषणय दूसरा, गृहविज्ञान से संबंधित प्रावधानों की पहचान और तीसरा, इन प्रावधानों की व्यावहारिक प्रासंगिकता का मूल्यांकन।

इस अध्ययन की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि गृहविज्ञान जैसे व्यावहारिक विषयों को अब तक की शिक्षा नीतियों में पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक नई शुरुआत का अवसर प्रदान करती है। यदि इस अवसर का सही उपयोग किया जाए तो गृहविज्ञान न केवल विद्यालयी शिक्षा में बल्कि उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा में भी एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्थापित हो सकता है।

गृहविज्ञान की अवधारणा और शैक्षणिक स्वरूप

गृहविज्ञान को परंपरागत रूप से घरेलू जीवन से जुड़ा विषय माना जाता रहा है। इसकी शैक्षणिक परिभाषा यह है कि यह दैनिक जीवन को सुचारु, सतत और वैज्ञानिक आधार पर संचालित करने वाले सिद्धांतों का अध्ययन है।¹ यह विषय विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तत्वों को एकीकृत करता है, जिससे मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में कार्य किया जा सके। गृहविज्ञान का मूल उद्देश्य व्यक्ति, परिवार और समुदाय के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। यह विषय केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू—भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और पारिवारिक संबंधों—से जुड़ा हुआ है।

गृहविज्ञान की पाँच प्रमुख शाखाएँ हैं—संसाधन प्रबंधन, खाद्य विज्ञान एवं पोषण, वस्त्र एवं परिधान, मानव विकास एवं परिवार अध्ययन, और विस्तार एवं संचार। संसाधन प्रबंधन में समय, धन और ऊर्जा के कुशल उपयोग का अध्ययन किया जाता है। खाद्य विज्ञान एवं पोषण में भोजन के पोषक तत्वों, खाद्य सुरक्षा और आहार योजना पर ध्यान दिया जाता है। वस्त्र एवं परिधान में वस्त्रों के चयन, निर्माण और डिजाइन का अध्ययन होता है। मानव विकास एवं परिवार अध्ययन में बाल विकास, पारिवारिक संबंध और मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। विस्तार एवं संचार में समुदाय तक ज्ञान पहुँचाने की विधियों पर कार्य होता है। इन शाखाओं के माध्यम से विद्यार्थी न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि व्यावहारिक कौशल का विकास भी करते हैं। शोध बताते हैं कि गृहविज्ञान की प्रकृति जीवन—कौशल, अनुभवात्मक अधिगम और बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देने में सक्षम है।² यही विशेषताएँ इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक बनाती हैं।

गृहविज्ञान की शैक्षणिक पद्धति पारंपरिक शिक्षा से भिन्न है। इसमें अवलोकन, प्रदर्शन, अभ्यास और पुनरावृत्ति के माध्यम से कौशल अर्जित किया जाता है। शिक्षार्थी विफलता से सीखते हैं, पुनः प्रयास करते हैं और धीरे-धीरे दक्षता प्राप्त करते हैं। यह पद्धति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित “सीखने का तरीका सीखने” के दर्शन से मेल खाती है।³ गृहविज्ञान में सिद्धांत और व्यवहार के बीच दूरी न्यूनतम है, क्योंकि प्रत्येक सैद्धांतिक अवधारणा का प्रायोगिक अनुप्रयोग अनिवार्य है। यह विशेषता इसे अन्य पारंपरिक विषयों से अलग करती है और इसे व्यावहारिक शिक्षा का आदर्श उदाहरण बनाती है।

गृहविज्ञान की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। पारंपरिक रूप से इसे “लड़कियों का विषय” माना जाता रहा है, लेकिन वास्तव में गृहविज्ञान के सभी पहलू—पोषण, स्वास्थ्य, वित्तीय प्रबंधन, बाल देखभाल—पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक गृहविज्ञान शिक्षा इस पूर्वाग्रह को तोड़ने और सभी विद्यार्थियों को जीवन के लिए तैयार करने पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों को केवल रोजगार के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि जीवन के लिए सक्षम बनाने पर बल देती है। नीति का केंद्रीय उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण है जो तर्कसंगत चिंतन, करुणा, सहानुभूति, साहस, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों से संपन्न हों। नीति यह मानती है कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल सूचना का संचय नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास है। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शैक्षणिक शोध दोनों से प्रेरित है।

नीति की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है लचीलापन। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को एक बार चुनी गई धारा में ही आगे बढ़ना पड़ता था। नीति इस स्थिति को बदलती है और विद्यार्थियों को विषय चयन की स्वतंत्रता, पुनः प्रयास का अवसर और बहुविषयक अध्ययन की सुविधा प्रदान करती है। यह लचीलापन विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है जो पारंपरिक धाराओं से इतर विषयों में रुचि रखते हैं या जिन्हें अपने कैरियर की दिशा बदलनी है। नीति में प्रस्तावित बहु-प्रवेश-बहु-निकास प्रणाली इस लचीलेपन को संस्थागत रूप प्रदान करती है।

तीसरी महत्वपूर्ण अवधारणा है व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा को समान दर्जा देना। नीति ने धारा-विभाजन को समाप्त करने की सिफारिश की है और दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों को समान महत्व देने पर बल दिया है। यह प्रावधान गृहविज्ञान जैसे व्यावहारिक विषयों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारंपरिक रूप से इसे कला संकाय का "हल्का" विषय माना जाता रहा है। नीति इस पूर्वाग्रह को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नीति यह भी सिफारिश करती है कि व्यावसायिक शिक्षा को माध्यमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, जिससे विद्यार्थी समय रहते व्यावहारिक कौशल अर्जित कर सकें।

चौथी महत्वपूर्ण अवधारणा है बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान। नीति मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित करती है और भारतीय भाषाओं के संवर्धन पर बल देती है। यह दृष्टि गृहविज्ञान के लिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि पोषण, स्वास्थ्य और पारिवारिक संबंधों की शिक्षा स्थानीय संदर्भ में अधिक प्रभावी होती है। नीति का यह प्रावधान गृहविज्ञान को समुदाय से जोड़ने में सहायक है।

नीति में कौशल-आधारित शिक्षा और गृहविज्ञान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कौशल-आधारित शिक्षा पर विशेष बल देती है। नीति के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि उस ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। कौशल-आधारित अधिगम में अवलोकन, प्रदर्शन, अभ्यास और अनुप्रयोग के चरण शामिल हैं।⁴ नीति का मानना है कि प्रत्येक विद्यार्थी में जन्मजात क्षमता होती है, और शिक्षा का कार्य उस क्षमता को पहचानकर विकसित करना है। यह दृष्टि गृहविज्ञान की शैक्षणिक पद्धति से पूरी तरह मेल खाती है, क्योंकि गृहविज्ञान में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी गति से सीखने और कौशल विकसित करने का अवसर मिलता है।

गृहविज्ञान की शैक्षणिक पद्धति इन सभी चरणों को समाहित करती है। खाद्य विज्ञान में पोषण की गणना, वस्त्र विज्ञान में परिधान निर्माण, संसाधन प्रबंधन में बजट नियोजन और मानव विकास में बाल विकास के सिद्धांतों का प्रायोगिक अध्ययन इसके उदाहरण हैं। शोध से पता चलता है कि शिक्षकों का गृहविज्ञान के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है और वे इसे जीवन-कौशल विकास का महत्वपूर्ण माध्यम मानते हैं।⁵ गृहविज्ञान में कौशल विकास केवल रोजगार के लिए नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, खाद्य विज्ञान का ज्ञान विद्यार्थी को पौष्टिक आहार चुनने में सक्षम बनाता है, जबकि संसाधन प्रबंधन का ज्ञान उसे वित्तीय रूप से सक्षम बनाता है।

नीति में प्रस्तावित मूल्यांकन पद्धति भी गृहविज्ञान के अनुरूप है। नीति परियोजना, अनुभव और प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन की सिफारिश करती है, जो पारंपरिक लिखित परीक्षा से भिन्न है।⁶ गृहविज्ञान में मूल्यांकन पहले से ही प्रायोगिक कार्य, परियोजना और प्रदर्शन के माध्यम से किया जाता है। नीति के अनुसार, मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थी की कमियों को उजागर करना नहीं, बल्कि उसकी प्रगति को पहचानना और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह दृष्टि गृहविज्ञान की मूल्यांकन परंपरा से पूरी तरह मेल खाती है। नीति में प्रस्तावित प्सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली गृहविज्ञान के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि इसमें विद्यार्थी के समग्र विकास-ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों-का आकलन किया जाता है।

नीति में बहुविषयक और अनुभवात्मक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुविषयक शिक्षा की अवधारणा को केंद्रीयता प्रदान करती है। नीति विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने और उन्हें एकीकृत करने का अवसर देने पर बल देती है। गृहविज्ञान की मूल प्रकृति ही बहुविषयक है-यह विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला और प्रौद्योगिकी को एक साथ जोड़ता है, उदाहरण के लिए, खाद्य विज्ञान में रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान का समावेश है, जबकि मानव विकास में मनोविज्ञान और समाजशास्त्र का। यह बहुविषयकता नीति के "एकीकृत दृष्टिकोण" के सिद्धांत का व्यावहारिक रूप है। गृहविज्ञान का विद्यार्थी एक साथ विज्ञान, कला और सामाजिक विज्ञान की पद्धतियों से परिचित होता है, जो उसे जटिल समस्याओं को समझने और हल करने में सक्षम बनाता है।

नीति में अनुभवात्मक अधिगम पर भी विशेष बल दिया गया है। इसमें इंटरनशिप, क्षेत्रीय कार्य, केस स्टडी और समुदाय-आधारित परियोजनाओं को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाने की सिफारिश की गई है। गृहविज्ञान में ये सभी पद्धतियाँ पहले से ही प्रयोग में हैं। विद्यार्थी समुदाय में जाकर पोषण संबंधी जागरूकता, स्वच्छता शिक्षा, बाल देखभाल और सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

शोध बताते हैं कि समुदाय संवर्धन कार्यक्रम गृहविज्ञान शिक्षा का अभिन्न अंग हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थी न केवल व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित करते हैं।¹⁷ नीति में समुदाय-केंद्रित शिक्षा पर जो बल दिया गया है, वह गृहविज्ञान की विस्तार शिक्षा परंपरा से मेल खाता है। गृहविज्ञान का विस्तार शिक्षा घटक विद्यार्थियों को समुदाय की वास्तविक समस्याओं से जोड़ता है और उन्हें समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है। यह अनुभवात्मक अधिगम का सर्वोत्तम उदाहरण है। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी जो ग्रामीण समुदाय में पोषण जागरूकता कार्यक्रम चलाता है, वह न केवल पोषण संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता और सामुदायिक संगठन के कौशल भी विकसित करता है।

नीति में प्रस्तावित “होलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड” भी गृहविज्ञान के लिए उपयुक्त है, क्योंकि यह विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को एक साथ दर्शाता है। गृहविज्ञान में विद्यार्थी का मूल्यांकन केवल उसके सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर नहीं, बल्कि उसके व्यावहारिक कौशल, सामाजिक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों के आधार पर भी किया जाता है।

नीति में व्यावसायिक शिक्षा और गृहविज्ञान की संभावनाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है और इसे सामान्य शिक्षा के समान महत्व देती है। नीति में उद्यमशीलता, नवाचार और कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है।¹⁸ नीति का मानना है कि व्यावसायिक शिक्षा केवल उन विद्यार्थियों के लिए नहीं है जो उच्च शिक्षा में नहीं जा पाते, बल्कि यह सभी के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है। नीति यह भी सिफारिश करती है कि व्यावसायिक शिक्षा को माध्यमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, जिससे विद्यार्थी समय रहते व्यावहारिक कौशल अर्जित कर सकें।

गृहविज्ञान में व्यावसायिक संभावनाएँ विपुल हैं। खाद्य प्रसंस्करण, पोषण परामर्श, परिधान डिजाइन, आंतरिक सज्जा, बाल विकास, वृद्धजन देखभाल और सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में गृहविज्ञान के विद्यार्थी स्वरोजगार और उद्यमशीलता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। नीति में प्रस्तावित बहु-प्रवेश-बहु-निकास प्रणाली, क्रेडिट ट्रांसफर और व्यावसायिक प्रमाणपत्र गृहविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए नए अवसर प्रदान करती है।¹⁹ ये प्रावधान विद्यार्थियों को एक साथ कई कौशल अर्जित करने और आवश्यकता पड़ने पर पढ़ाई रोककर काम करने और बाद में वापस लौटने की सुविधा देते हैं। यह लचीलापन उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो आर्थिक कारणों से अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने को मजबूर होते हैं।

विश्वविद्यालयों में गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम अब उद्यमशीलता और कौशल विकास को केंद्र में रखकर तैयार किए जा रहे हैं। शोध बताते हैं कि नीति के अंतर्गत गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक पाठ्यक्रम, इंटरनशिप और परियोजना कार्यों को शामिल किया गया है।²⁰ कई विश्वविद्यालयों ने गृहविज्ञान के साथ उद्यमशीलता विकास, लघु व्यवसाय प्रबंधन और डिजिटल विपणन जैसे पाठ्यक्रमों को जोड़ा है, जिससे स्नातकों की रोजगार क्षमता में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, गृहविज्ञान के विद्यार्थी खाद्य प्रसंस्करण इकाई, परिधान निर्माण इकाई, बाल देखभाल केंद्र, वृद्धाश्रम और समुदाय विकास परियोजनाओं जैसे क्षेत्रों में उद्यमशीलता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। नीति में प्रस्तावित “स्टार्टअप” और “इनोवेशन” को बढ़ावा देने वाले प्रावधान गृहविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी हैं।

समीक्षात्मक विश्लेषण: अवसर और चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गृहविज्ञान के लिए कई अवसर प्रदान करती है। पहला, नीति की बहुविषयक दृष्टि गृहविज्ञान की मूल प्रकृति से मेल खाती है। दूसरा, कौशल-आधारित शिक्षा पर बल गृहविज्ञान की व्यावहारिक पद्धति को मान्यता देता है। तीसरा, समुदाय-केंद्रित शिक्षा और अनुभवात्मक अधिगम की सिफारिशें गृहविज्ञान की विस्तार परंपरा को सुदृढ़ करती हैं। चौथा, व्यावसायिक शिक्षा को समान दर्जा दिए जाने से गृहविज्ञान की रोजगार क्षमता बढ़ती है।²¹ इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए गृहविज्ञान विभागों को अपने पाठ्यक्रमों को नए सिरे से डिजाइन करने की आवश्यकता है। उन्हें स्थानीय उद्योगों और समुदायों के साथ साझेदारी स्थापित करनी चाहिए और विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ना चाहिए। लेकिन चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। शोध से पता चलता है कि गृहविज्ञान को अभी भी अकादमिक जगत में कम महत्व दिया जाता है। इसे “सरल” या “केवल लड़कियों के लिए” विषय मानने की मानसिकता अभी भी व्याप्त है।²² यह पूर्वाग्रह न केवल विद्यार्थियों और अभिभावकों में है, बल्कि कई शिक्षकों और प्रशासकों में भी है। इसके परिणामस्वरूप, गृहविज्ञान को अक्सर वैकल्पिक विषय के रूप में ही पढ़ाया जाता है और इसे उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए कम महत्वपूर्ण माना जाता है।

कुछ राज्यों में नीति के क्रियान्वयन में गृहविज्ञान को हाशिये पर डालने की प्रवृत्ति देखी जा रही है, उदाहरण के लिए, उत्तराखंड में कक्षा नौ में गणित को अनिवार्य करने के कारण गृहविज्ञान को हटाने की सिफारिश की गई है। यह प्रवृत्ति चिंताजनक है क्योंकि यह नीति की समावेशी दृष्टि के विपरीत है। नीति का उद्देश्य विषयों के बीच समानता स्थापित करना है, न कि कुछ विषयों को हटाकर दूसरों को बढ़ावा देना।

शोध बताते हैं कि शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होते हुए भी, गृहविज्ञान को मुख्यधारा में लाने के लिए और अधिक नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है। विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसे केवल वैकल्पिक विषय के रूप में नहीं, बल्कि अनिवार्य या मुख्य विषय के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।¹³ इसके अतिरिक्त, गृहविज्ञान शिक्षकों के प्रशिक्षण, अवसंरचना और शिक्षण सामग्री में निवेश की आवश्यकता है। अनेक विद्यालयों में गृहविज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय और अन्य संसाधनों की कमी है, जिससे प्रभावी शिक्षण बाधित होता है।

एक और महत्वपूर्ण चुनौती यह है कि गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम को अभी भी पारंपरिक ढाँचे से पूरी तरह मुक्त नहीं किया गया है। कई विश्वविद्यालयों में अभी भी पुराने पाठ्यक्रम ही पढ़ाए जा रहे हैं, जो नीति की भावना से मेल नहीं खाते। पाठ्यक्रम को डिजिटल प्रौद्योगिकी, उद्यमशीलता, सतत विकास और सामाजिक न्याय जैसे समकालीन विषयों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, गृहविज्ञान के शोध कार्य को भी प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, ताकि यह विषय नए ज्ञान के सृजन में योगदान दे सके।

इन चुनौतियों का समाधान नीति के प्रभावी क्रियान्वयन और शैक्षणिक संस्थानों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करता है। राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों और समुदायों को मिलकर कार्य करना होगा। इसके लिए एक राष्ट्रीय स्तर का रोडमैप तैयार किया जाना चाहिए, जिसमें गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन पद्धति और व्यावसायिक संभावनाओं पर विस्तृत दिशा-निर्देश हों।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गृहविज्ञान शिक्षा के बीच गहरा वैचारिक सामंजस्य है। नीति की मूल अवधारणाएँ—बहुविषयकता, कौशल—आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, समुदाय—केंद्रित शिक्षा और व्यावसायिक दृष्टि—गृहविज्ञान की शैक्षणिक पद्धति में पहले से ही निहित हैं। नीति गृहविज्ञान को पुनर्परिभाषित करने और उसे मुख्यधारा में स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है। यह अवसर ऐतिहासिक है क्योंकि इससे पहले किसी भी शिक्षा नीति ने व्यावहारिक और जीवन—उपयोगी विषयों को इतना महत्व नहीं दिया।

इस अवसर का लाभ उठाने के लिए आवश्यक है कि गृहविज्ञान का पाठ्यक्रम नवीनतम सामाजिक, तकनीकी और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित किया जाए। शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए, मूल्यांकन पद्धति को और अधिक व्यावहारिक बनाया जाए, और समुदाय के साथ साझेदारी को संस्थागत रूप दिया जाए साथ ही, गृहविज्ञान को लैंगिक पूर्वाग्रह से मुक्त करके सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपलब्ध कराया जाए तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि—एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो ज्ञान, कौशल, मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय करे—गृहविज्ञान के माध्यम से साकार हो सकेगी।

गृहविज्ञान की शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए भी अनिवार्य है। यदि भारत को एक ज्ञान—आधारित समाज और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनना है, तो गृहविज्ञान जैसे व्यावहारिक विषयों को उचित स्थान देना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक ठोस आधार प्रदान करती है। आवश्यकता केवल इस आधार पर एक सुदृढ़ और समावेशी शैक्षणिक भवन खड़ा करने की है।

संदर्भ सूची

1. कर्नाटक राज्य महिला विश्वविद्यालय (2022) *गृहविज्ञान पाठ्यक्रम रूपरेखा*. केएसडब्ल्यू, बेंगलुरु, पृ. 12।
2. पटेल, आई. (2024) गृहविज्ञान शिक्षा में समुदाय संवर्धन कार्यक्रमों का एकीकरण. *आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस*, 29(3), 5।
3. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 8।

4. सेनगुप्ता, एम. (2021) *च्वाइस, चांस एंड चौलेंज*. टीचर प्लस, 2021, <https://teacherplus.org>, Accessed on 12/06/2026.
5. मनोचा एवं शर्मा, (2023) पुनर्संकल्पना. *इन्सपिरा जर्नल ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप*, 01(03), 27।
6. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 18।
7. पटेल, (2018) *समुदाय संवर्धन*. अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 8।
8. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 20।
9. के.एस.के.वी. कच्छ विश्वविद्यालय (2023) एनईपी 2020 आधारित पाठ्यक्रम: बी.ए. गृहविज्ञान. केएसकेवीकेयू, भुज, पृ. 5।
10. डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय (2024) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: बी.एससी. गृहविज्ञान पाठ्यक्रम. डीबीआरएयू, आगरा, पृ. 9।
11. भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 22।
12. अमर उजाला, "उत्तराखंड: अब सरकारी स्कूलों में कक्षा 9 की छात्राएँ नहीं पढ़ पाएँगी गृह विज्ञान, गणित की गई अनिवार्य," 20 दिसंबर 2024, <https://www.amarujala.com>, Accessed on 20/06/2026.
13. मनोचा एवं शर्मा, (2023) पुनर्संकल्पना. *इन्सपिरा जर्नल ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप*, 01(03), 28।

---==00==---